औपपातिक सूत्र (फोल्डर नं. ००१२५३)

मुख्य टाईटल
समर्पण
प्रकाशकीय
आदि वचन
श्रीमान् दुलीचन्दजी सा. चोरडिया
प्रस्तावना
अनुक्रम
औपपातिकसूत्र
चम्पानगरी ---------- ३
पूर्णभद्र चैत्य ---------- ४
वन-खण्ड ---------- ८
पादप ---------- ८
अशोक वृक्ष ---------- ९
शिलापट्टक ---------- १२
चम्पाधिपति कूणिक ---------- १३
राजमहिषी धारिणी ---------- १४
कूणिक का दरबार ---------- १५
भगवान् महावीर : पदार्पण ---------- १५
प्रवृत्तिव्यापृत द्वारा सूचना ---------- १९
कूणिक द्वारा भगवान् का परोक्ष वन्दन ---------- २१
भगवान् का चम्पा में आगमन ---------- २३
भगवान् के अन्तेवासी ---------- २३
ज्ञानी : शक्तिधर : तपस्वी ---------- २४
रत्नावली तप ---------- २७
करनाकवली तप ---------- २८
एकावली तप ---------- २९
लघुसिंहनिष्क्रीडित तप ---------- ३०
महासिंहनिष्कीडित तप ---------- ३१
भद्र प्रतिमा ---------- ३२
महाभद्र प्रतिमा ---------- ३३
सर्वतोभद्र प्रतिमा ---------- ३३
लघुसर्वतोभद्र प्रतिमा ---------- ३५
आयंबिल वर्धमान ---------- ३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्षुप्रतिमा ---------- ३८
अहोरात्रि भिक्षुप्रतिमा ---------- ४०
एकरात्रिक भिक्षुप्रतिमा ---------- ४१
लघुमोक प्रतिमा---------- ४१
यवमध्यचन्द्र प्रतिमा ---------- ४१
स्थविरों के गुण---------- ४२
गुणसम्पन्न अनगार ---------- ४३
तप का विवेचन---------- ४६
प्रतिसंलीनता ---------- ५५
प्रायश्चित ---------- ५७
विनय-भेद-प्रभेद---------- ५९
आचार्य---------- ६०
उपाध्याय ---------- ६१
स्थविर---------- ६४
ध्यान ---------- ६९
व्युत्सर्ग---------- ७५
अनगारों द्वारा उत्कृष्ट धर्मसाधना---------- ८०
भगवान् की सेवा में असुरकुमार देवों का आगमन ---------- ८२
शेष भवनवासी देवों का आगमन ---------- ८५
व्यन्तरदेवों का आगमन ---------- ८७
ज्योतिष्क देवों का आगमन---------- ८८
वैमानिक देवों का आगमन ---------- ८८
जन-समुदाय द्वारा भगवान् का वन्दन---------- ९०
महाराज कूणिक को सूचना---------- ९३
दर्शन-वन्दन की तैयारी ---------- ९३
प्रस्थान---------- १००
दर्शन-लाभ---------- १०६
रानियों का सपरिजन आगमन : वन्दन ---------- १०७
भगवान् द्वारा धर्म-देशना---------- १०८
परिषद्-विसर्जन ---------- ११४
इन्द्रभूति गौतम की जिज्ञासा---------- ११६
पाप-कर्म का बन्ध---------- ११७
एकान्तबाल : एकान्तसुप्त का उपपात---------- ११८
क्लिशित-उपपात---------- ११९
भद्रप्रकृति जनों का उपपात---------- १२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिक्लेश-बाधित नारियों का उपपात ---१२३
द्विद्रव्यादिसेवी मनुष्यों का उपपात---१२४
वानप्रस्थों का उपपात ---१२५
प्रव्रजित श्रमणों का उपपात---१२८
परिव्राजकों का उपपात ---१२९
अम्बड परिव्राजक के सात सौ अन्तेवासी---१३६
चमत्कारी अम्बड परिव्राजक---१४१
प्रत्यनीकों का उपपात ---१५३
संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यक्योनि जीवों का उपपात ---१५४
आजीवकों का उपपात---१५४
आत्मोत्कर्षक प्रव्रजित श्रमणों का उपपात ---१५५
निह्नवों का उपपात---१५५
अल्पारंभी आदि मनुष्यों का उपपात---१६०
अनारंभी श्रमण ---१६२
सर्वकामादि विरत मनुष्यों का उपपात---१६५
केवलि-समुद्घात में कर्म-पुद्गलों का विस्तार---१६५
केवलि-समुद्घात का हेतु ---१६७
समुद्घात का स्वरूप---१६८
समुद्घात के पश्चात् योग-प्रवृत्ति ---१७०
योग-निरोध : सिद्धावस्था ---१७१
सिद्धों का स्वरूप---१७३
सिद्ध्यमान के संहनन, संस्थान आदि ---१७३
सिद्धों का परिवास ---१७४
सिद्ध : सार संक्षेप---१७७
परिशिष्ट : गण और कुल संबंधी विशेष विचार---१८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org